International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 17-10-2025, Accepted: 16-11-2025, Published: 01-12-2025
Volume 11, Issue 6, 2025, Page No. 105-109

छत्तीसगढ़ के शैक्षणिक पुस्तकालयों में हरित पुस्तकालय अभ्यास पर एक समीक्षात्मक अध्ययन (पर्यावरण की दिशा में एक नया कदम)

पुखराज प्राज[1], डिगेश धृतलहरे[2]
[1] सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, एसडीयू, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] विद्यार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, एसडीयू, नया रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
आज के समय में पूरी दुनिया पर्यावरण से जुड़ी कई गंभीर समस्याओं का सामना कर रही है, जैसे – हवा और पानी का प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, बढ़ता तापमान, और ऊर्जा की कमी। इन सब कारणों से हमारे जीवन पर सीधा प्रभाव पड़ रहा है। इसलिए अब यह जरूरी हो गया है कि हर क्षेत्र, चाहे वह उद्योग हो, शिक्षा हो या पुस्तकालय, सभी पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनें और "हरित" यानी पर्यावरण के अनुकूल तरीके अपनाएँ। पुस्तकालय केवल किताबें देने या जानकारी उपलब्ध कराने की जगह नहीं है, बल्कि यह समाज में जागरूकता फैलाने और लोगों को शिक्षित करने का एक बहुत महत्वपूर्ण केंद्र है। जब पुस्तकालय खुद पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में कदम उठाते हैं, तो वे समाज के लिए एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। "हरित पुस्तकालय" का मतलब होता है ऐसा पुस्तकालय जो अपनी गतिविधियों–जैसे भवन निर्माण, ऊर्जा उपयोग, कागज की बचत, कचरे का प्रबंधन, और डिजिटल सेवाओं के उपयोग–में पर्यावरण की सुरक्षा को प्राथमिकता दे। इसका उद्देश्य है कि पुस्तकालय का संचालन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना, अधिक से अधिक टिकाऊ और स्वच्छ तरीके से हो।

मूल शब्द: हरित पुस्तकालय, ऊर्जा, रिसाइकल, सतत विकास, प्रबंधन, डिजिटल सेवाओं, ई–बुक्स, ऑनलाइन जर्नल्स

प्रस्तावना
पुस्तकालय किसी भी समाज की शिक्षा और ज्ञान का केंद्र होता है। यह वह स्थान है जहाँ लोग नई जानकारी प्राप्त करते हैं, शोध करते हैं और अपने विचारों को विकसित करते हैं। पहले के समय में पुस्तकालय केवल किताबों और पत्रिकाओं तक सीमित थे, लेकिन आज के तकनीकी युग में पुस्तकालयों का रूप बदल गया है। अब पुस्तकालय सिर्फ अध्ययन का स्थान नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक और पर्यावरण संरक्षण का भी एक माध्यम बन चुके हैं। आज जब पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संकट जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं. तब "हरित पुस्तकालय" (Green Library) की अवधारणा बहुत महत्वपूर्ण हो गई है। हरित पुस्तकालय का मतलब है ऐसा पुस्तकालय जो अपने कार्यों को इस तरह से संचालित करे कि पर्यावरण को कम से कम नुकसान पहुँचे। इसमें ऊर्जा की बचत करना, कागज़ का कम उपयोग करना, पुरानी चीजों को पुनः उपयोग में लाना (Recycling). सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा का प्रयोग करना, और डिजिटल संसाधनों को प्राथमिकता देना शामिल है।

साहित्य समीक्षा
हरित पुस्तकालय (Green Library) के विषय पर कई शोधकर्ताओं ने समय–समय पर अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में पुस्तकालयों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती जा रही है।
सिंह और कौर (2019) ने अपने अध्ययन में बताया कि विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में पुस्तकालयाध्यक्ष हरित प्रथाओं (Green Practices) जैसे बिजली की बचत, कागज़ का कम उपयोग, और डिजिटल सेवाओं को अपनाने के प्रति काफी जागरूक है। हालांकि, उन्होंने यह भी कहा कि वास्तविक रूप से इन प्रथाओं को लागू करना अभी भी चुनौतीपूर्ण है। इसका कारण है – सीमित बजट, प्रशिक्षण की कमी और पर्याप्त संसाधनों का अभाव।
साहू (2021) ने अपने शोध में पाया कि भारत के कुछ शैक्षणिक पुस्तकालयों ने पर्यावरण के अनुकूल कदम उठाए हैं, जैसे सौर ऊर्जा का उपयोग, वर्षा जल संचयन और कचरे के पुनर्चक्रण (Recycling) की व्यवस्था। लेकिन, उन्होंने यह भी बताया कि अधिकतर पुस्तकालयों में नीति–निर्माण की कमी, धन की अनुपलब्धता और प्रशासनिक समर्थन न मिल पाने के कारण हरित पहल पूरी तरह सफल नहीं हो पाई है।
टिस (2020) के अनुसार, पुस्तकालय केवल किताबों का भंडार नहीं है, बल्कि वे "सतत विकास" (Sustainable Development) के लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में एक प्रमुख माध्यम बन सकते हैं। पुस्तकालय जनसाधारण को पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा बचत और टिकाऊ जीवनशैली के बारे में शिक्षित करने का एक प्रभावी प्लेटफॉर्म हैं।
सार रूप में कहा जाए तो. पिछले सोध यह बताते हैं कि हरित पुस्तकालयों की अवधारणा तेजी से लोकप्रिय हो रही है, लेकिन इसे जमीन पर उतारने के लिए वित्तीय सहायता, ठोस नीति और जागरूकता कार्यक्रमों की जरूरत है। भविष्य में यदि इन बाधाओं को दर किया।

हरित पुस्तकालय अभ्यास की अवधारणा
हरित या 'ग्रीन' पुस्तकालय वह होता है, जो अपने कामकाज में पर्यावरण, समाज और अर्थव्यवस्था – तीनों के संतुलन को ध्यान में रखता है। इसका मतलब यह है कि पुस्तकालय सिर्फ ज्ञान देने का केंद्र नहीं होता, बल्कि वह पर्यावरण की रक्षा और स्थायी विकास के लिए I भी काम करता है। हरित भवन और उपकरण हरित पुस्तकालय का सबसे पहला उद्देश्य होता है कि उसकी इमारत और उपकरण पर्यावरण के अनुकूल हों। जैसे सोलर पैनल से बिजली बनाना प्राकृतिक रोशनी और हवा का इस्तेमाल करना और बिजली की खपत को कम करना। इससे कार्बन उत्सर्जन घटता है और पर्यावरण को नुकसान नहीं पहुँचता है पुस्तकालय के रोजमर्रा के कामों को भी इस तरह से किया जाता है कि पर्यावरण को नुकसान न हो। जैसे कागज़ की जगह डिजिटल दस्तावेजों का उपयोग प्रिंटिंग कम करना और पुराने कागजों को रीसायकल करना। हरित पुस्तकालय कम उपभोग के सिद्धांत पर चलता है। इसमें चीज़ों को बार–बार उपयोग में

लाना रीसायकल करना और साझा करना शामिल है। उदाहरण के लिए पुस्तकें, उपकरण या जगहों को समुदाय के बीच साझा किया जाता है ताकि संसाधनों की बर्बादी न हो। पुस्तकालय उपयोग कर्ताओं को पर्यावरण से जुड़ी जानकारी, शिक्षा, और प्रशिक्षण प्रदान करता है। डिजिटल सेवाएँ (जैसे– ई–बुक्स, ऑनलाइन जर्नल्स) के माध्यम से कागज की बचत होती है और संसाधनों का बेहतर उपयोग होता है। इस तरह पुस्तकालय अपने कार्यों से सकारात्मक कार्बन हैंडप्रिंट छोड़ता है यानी पर्यावरण को नुकसान नहीं बल्कि फायदा पहुँचाता है। हरित पुस्तकालय केवल पर्यावरण की चिंता नहीं करता, बल्कि समाज के हर वर्ग को जोड़ने का प्रयास भी करता है। यह शिक्षा, साक्षरता, सामाजिक समानता, और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा देता है। हर व्यक्ति को जानकारी तक समान पहुँच दिलाने की दिशा में काम करता है। वैश्विक पर्यावरण प्रतिबद्धता हरित पुस्तकालय संयुक्त राष्ट्र और वैश्विक लक्ष्यों में प्रेरित होकर काम करता है। पुस्तकालयों में कागज़ का उपयोग बहुत ज़्यादा होता है, क्योंकि किताबें और दस्तावेज़ मुख्यतः कागज़ पर ही होते हैं। लेकिन पेड़ काटने, प्रसंस्करण, और परिवहन जैसी प्रक्रियाओं से पर्यावरण को भारी नुकसान होता है। इसलिए अब पुस्तकालय रीसाइक्लिंग पर जोर दे रहे है यानी पुराने कागज़ को दोबारा उपयोग में लाकर नई चीजें बनाई जाती हैं। भारत में हरित पुस्तकालय की सोच 1990 के दशक में शुरू हुई। आज कई विश्वविद्यालय जैसे दिल्ली विश्वविद्यालय (और कलकत्ता विश्वविद्यालय अपने पुस्तकालयों में डिजिटल सेवाएँए इंटरनेट सुविधाए और ई–संमाध्धन उपलब्ध करा रहे हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के पास 37 से अधिक पुस्तकालय है और ७५ इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस उपलब्ध है। यह सभी प्रयास हरित पुस्तकालय की दिशा में एक बड़ा कदम है। हरित पुस्तकालय का मतलब होता है ऐसा पुस्तकालय जो पर्यावरण का ध्यान रखते हुए काम करे। यानी जहाँ बिजली की बचत हो, कागज कम इस्तेमाल हो, कचरा कम बने और आसपास का माहौल साफ–सुथरा और हरा–भरा रखा जाए। आज के समय में जब पर्यावरण की समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब हर क्षेत्र में 'ग्रीन' सोच अपनाना जरूरी हो गया है। इसी तरह पुस्तकालय भी पर्यावरण संरक्षण में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। छत्तीसगढ़ जैसे हरे–भरे और प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर राज्य में हरित पुस्तकालय का विचार बहुत उपयोगी है। छत्तीसगढ़ अपनी जंगल–भूमि, पारंपरिक संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता के लिए जाना जाता है। यहाँ के स्कूल, कॉलेज और सरकारी संस्थान अगर हरित पुस्तकालय की दिशा में काम करें, तो यह न सिर्फ पर्यावरण की सुरक्षा में मदद करेगा, बल्कि लोगों को भी प्रकृति के प्रति जागरूक बनाएगा।

छत्तीसगढ़ के पुस्तकालय (विश्वविद्यालय) से हरित पुस्तकालय की संभावना

आज के समय में जब पूरी दुनिया प्रक्षेपण जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा की कमी जैसी समस्याओं से परेशान है, तब हर क्षेत्र में पर्यावरण की रक्षा के लिए कदम उठाना बहुत जरूरी हो गया है। शिक्षा और ज्ञान के केंद्र के रूप में पुस्तकालय भी अब इस दिशा में आगे बढ़ रहे है। ऐसा पुस्तकालय जो पर्यावरण के अनुकृत तरीके अपनाता है उसे हरित पुस्तकालय कहा जाता है। हरित पुस्तकालय का मतलब होता है ऐसा पुस्तकालय जो बिजली और कागज़ की बचत करे, कचरे को सही तरीके से निपटाए डिजिटल साधनों का उपयोग बढ़ाए और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाए। छत्तीसगढ़ एक हरियाली से भरपूर राज्य है। यहाँ के विश्वविद्यालय अगर हरित नीतियाँ अपनाएँ तो यह राज्य न सिर्फ शिक्षा के क्षेत्र में बल्कि पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में भी एक उदाहरण बन सकता है। हरित पुस्तकालय का मुख्य उद्देश्य है– ऊर्जा और संसाधनों की बचत करना एवं पर्यावरण को स्वच्छ रखना और छात्रों व कर्मचारियों में पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी की भावना जगाना। विश्वविद्यालयों में इस दिशा में कई कदम उठाए जा सकते हैं जैसे सौर ऊर्जा का उपयोग, स्म्य लाइटम लगाना, पुराने कागज़ों का पुनः उपयोग करना, और डिजिटल पुस्तकालय। छत्तीसगढ़ में हरित पुस्तकालय की संभावनाएँ बहुत ज्यादा है। राज्य में धूप भरपूर मिलती है, इसलिए सौर ऊर्जा से बिजली बनाई जा सकती है। इससे पुस्तकालय में बिजली की खपत घटेगी। इसके अलावा विश्वविद्यालयों में ई–बुक्स और ऑनलाइन जर्नल्स के इस्तेमाल से कागज़ की खपत कम की जा सकती है। रीसाइक्लिंग नीति अपनाकर पुराने कागज़ों और किताबों का पुनः उपयोग किया जा सकता है। नए पुस्तकालय भवन बनाते समय हरित भवन के सिद्धांतों का पालन किया जा सकता है–जैसे प्राकृतिक रोशनी का उपयोगए वर्षा जल संचयनए और पर्यावरण–अनुकुल निर्माण सामग्री। विश्वविद्यालयों को अपनी ग्रीन लाइब्रेरी पॉलिसी बनानी चाहिए ताकि हर साल इस दिशा में ठोस कदम उठाए जा सकें। राज्य सरकार को ऐसे पुस्तकालय को प्रोत्साहन देने के लिए आर्थिक मदद करनी चाहिए। पुस्तकालय स्टाफ को 'ग्रीन टेक्नोलॉजी' से जुड़ा प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इसके अलावाए छात्रों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए ग्रीन लिटरेसी अभियान चलाया जा सकता है। विश्वविद्यालयों में ईको क्लब बनाकर हरित गतिविधियों की निगरानी और प्रचार किया जा सकता है। कुल मिलाकर कहा जाए तो छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालयों में हरित पुस्तकालयों की संभावनाएँ बहुत उज्वल है। अगर विश्वविद्यालय और सरकार मिलकर इस दिशा में प्रयास करेंए तो ये पुस्तकालय न केवल ऊर्जा और संसाधनों की बचत करेंगे बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाएँगे। हरित पुस्तकालय भविष्य की जरूरत है यह शिक्षाए तकनीक और पर्यावरण को साथ लेकर चलने का एक सुंदर उदाहरण बन सकता है। सौर ऊर्जा का उपयोग छत्तीसगढ़ ऐसा राज्य है जहाँ साल के ज्यादातर दिन सूरज की अच्छी धूप रहती है। इसलिए यहाँ पुस्तकालयों में सोलर पैनल लगाकर विजती बनाई जा सकती है। इससे न केवल बिजाती बिल कम होगा बल्कि यह पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद होगा क्योंकि इसमें कोयला या डीज़ल जैसी प्रक्षण फैलाने वाली चीज़ों का इस्तेमाल नहीं होता। पुस्तकालय में लाइट, पंखे, कंप्यूटर और अन्य उपकरण सौर ऊर्जा से चलाए जा सकते हैं। यह तरीका लंबे समय तक टिकाऊ और सस्ता भी है। डिजिटल पुस्तकालय आज के समय में तकनीक बहुत आगे बढ़ चुकी है। अब जरूरत है कि छत्तीसगढ़ के विश्वविद्यालय और कॉलेज डिजिटल पुस्तकालय बनाएँ जहाँ छात्र और शोधार्थी ई बुक ऑनलाइन जर्नला, रिसर्च पेपर और डेटावेस तक आसानी से पहुंच सके।

राज्य में अवस्थित शैक्षणिक विश्वविद्यालय पुस्तकालयों की सूची

क्रमांक	संभाग का नाम	विश्वविद्यालय का प्रकार		संख्या	रिमार्क
		निजी	शासकीय		
1	सरगुजा	0	1	1	
2	बिलासपुर	3	4	7	
3	रायपुर	9	6	15	
4	दुर्ग	6	5	11	
5	बस्तर	0	1	1	
योग		18	17	35	

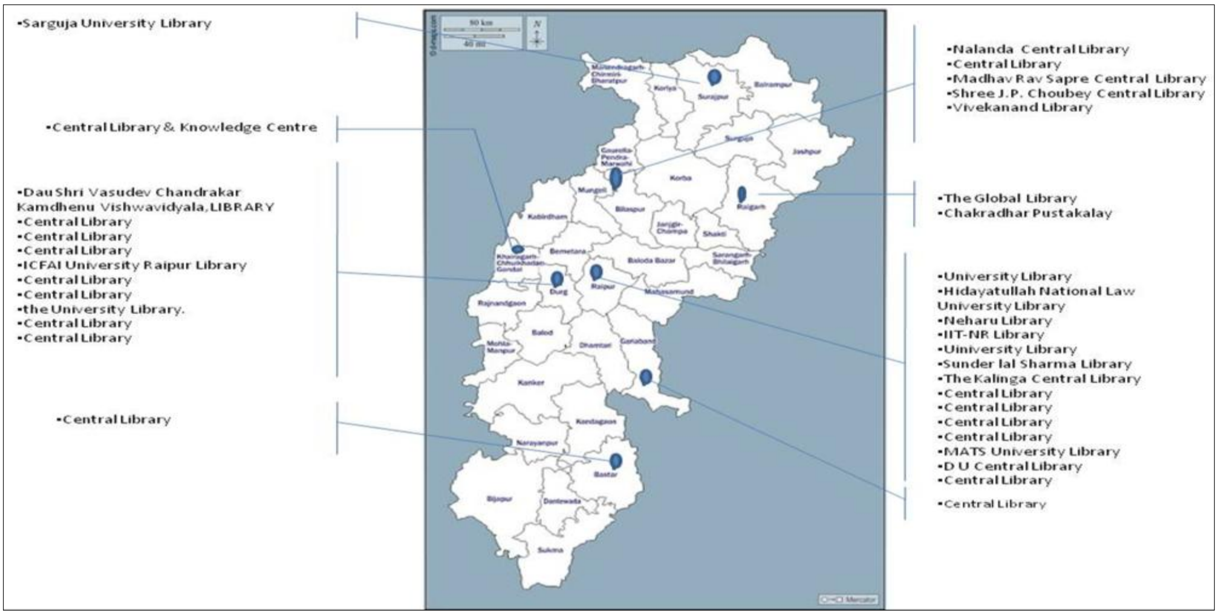

छत्तीसगढ़ राज्य में उपस्थित कुल विवि में पुस्तकालय

छत्तीसगढ़ के लगभग सभी विश्वविद्यालयों में लाइब्रेरी की सुविधा है, क्योंकि यह एक बुनियादी और आवश्यक सुविधा है जो उच्च शिक्षा संस्थानों का एक अभिन्न अंग है। राज्य में कुल मिलाकर 17 शासकीय विश्वविद्यालयए 18 निजी विश्वविद्यालय और कई अन्य कॉलेज है, जिनमें से अधिकांश में अपनी–अपनी लाइब्रेरी है। सभी विश्वविद्यालयों में लाइब्रेरी की उम्मीद है विश्वविद्यालय की स्थापना और उसके संचालन के लिए लाइब्रेरी एक मुख्य आवश्यकता है। इसलिए यह मानना तर्कसंगत है कि छत्तीसगढ़ के सभी 17 शासकीय और 18 निजी विश्वविद्यालयों में अपनी लाइब्रेरी है। अन्य संस्थानः इसके अतिरिक्त राज्य में कई अनुदान प्राप्त और गैर–अनुदान अशासकीय कॉलेज भी हैं।

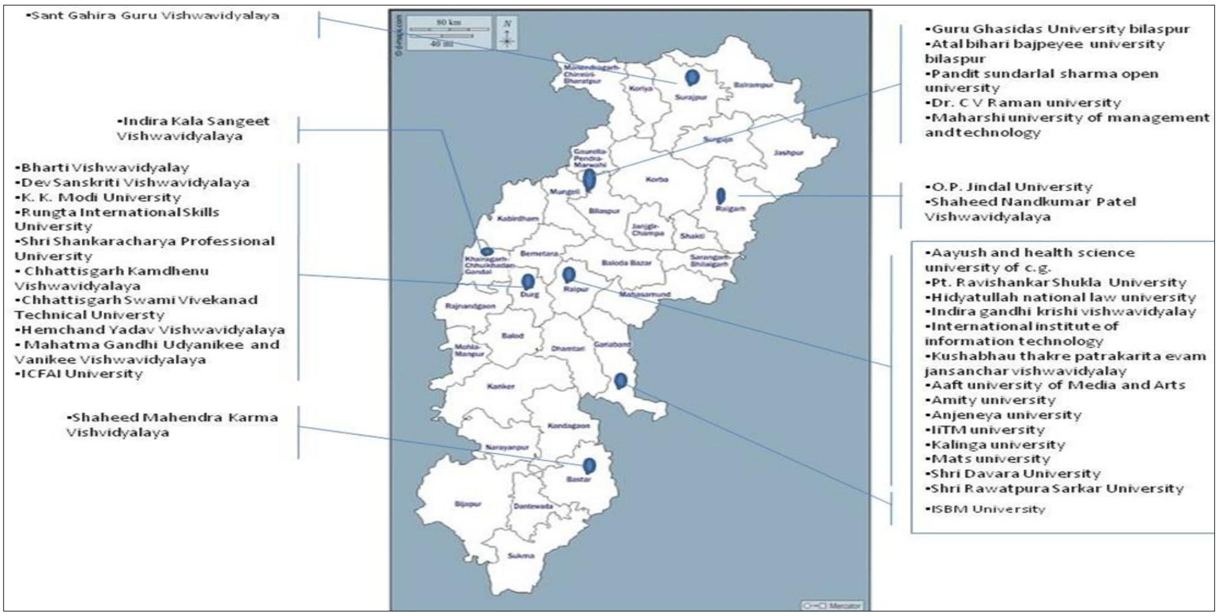

हरित पुस्तकालय के अभ्यास से होने वाले लाभ

हरित पुस्तकालय पर्यावरण संरक्षण में अहम भूमिका निभाता है। यहाँ सौर ऊर्जा, वर्षा जल संग्रहण और प्राकृतिक रोशनी का उपयोग किया जाता है जिससे प्रदूषण कम होता है और ऊर्जा इससे कागज़ की बर्बादी कम होगी और एक पेपरलेस माहोल तैयार किया जा सकेगा। साथ ही छात्र कहीं से भी मोबाइल या कंप्यूटर पर पढ़ सकते हैं, जिसमे समय और ऊर्जा दोनों की बचत होगी। रीसाइक्लिंग नीति पुस्तकालयों में हर साल बहुत सा पुराना कागज पुराने समाचार पत्र पत्रिकाएँ और अन्य सामग्री जमा होती रहती है। इनको सीधा फेंकने की बजाय पुनः उपयोग (रीसाइक्लिंग) किया जा सकता है। उदाहरण के लिए पुराने कागज़ को रिसाइक्लिंग कर नई फाइलें या नोटबुक बनाई जा सकती है या इन्हें पेपर आर्ट में उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करने से संसाधनों की बचत होती है और पर्यावरण पर दबाव कम पड़ता है। पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता हरित पुस्तकालय सिर्फ इमारत नहीं बल्कि एक सोच है। छत्तीसगढ़ में ग्रीन लिटरेसी अभियान चलाकर छात्रों, शिक्षकों और स्टाफ में यह जागरुकता फैलाई जा सकती है कि पर्यावरण की रक्षा क्यों जरूरी है और इसे कैसे किया जा सकता है। पुस्तकालय में ग्रीन पोस्टर, जागरूकता सेमिनार, वृक्षारोपण अभियान जैसी गतिविधिया की जा सकती हैं। इससे सबमें "हरित सोच" विकसित होगी और लोग अपने आसपास के माहौल को साफ–सुथरा रखने की दिशा में प्रेरित होंगे। हरित भवन निर्माण जब भी नए पुस्तकालय बने, तो उन्हें पर्यावरण अनुकूल तरीके से बनाया जा सकता है। जैसे – भवन में प्राकृतिक रोशनी और हवा के लिए बड़ी खिड़कियाँ हो, वर्षा जल संग्रहण की व्यवस्था हो,

निर्माण में पर्यावरण–अनुकूल सामग्री जैसे फ्लाई ऐमा ईंट या पुनर्चकित लकड़ी का उपयोग हो और भवन के आसपास पौधे व पेड़ लगाए जाएँ। इससे न केवल ऊर्जा की बचत होगी, बल्कि एक शांत और सुखद पढ़ने का वातावरण भी मिलेगा। आज पूरी दुनिया पर्यावरण प्रदुषण, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा की कमी और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन जैसी समस्याओं का सामना कर रही है। ऐसे में हर क्षेत्र में पुस्तकालय जो ज्ञान का प्रमुख केंद्र है। अब "हरित पुस्तकालय" के रूप में पर्यावरण संरक्षण की दिशा में योगदान दे रहे है। हरित पुस्तकालय अभ्यासों का उद्देश्य ऊर्जा की बचत, संसाधनों का सही उपयोग कचरे का पुनर्चक्रण और डिजिटल संसाधनों के माध्यम से पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना है। यह न केवल पर्यावरण की रक्षा करता है, बल्कि उपयोगकर्ताओं को बेहतर सुविधा और संस्थान को अच्छी छवि भी प्रदान करता है। आज के समय में प्रदूषण बढ़ना तापमान और ऊर्जा संकट जैसी समस्याएँ लगातार बढ़ रही है। इन परिस्थितियों में शिक्षा संस्थानों और पुस्तकालयों की जिम्मेदारी है कि वे पर्यावरण के अनुकुल तरीके अपनाएँ। हरित पुस्तकालय का अर्थ है ऐसा पुस्तकालय जो अपनी संरचनाए संसाधन उपयोग और कार्य प्रणाली में पर्यावरणीय सिद्धांतो को अपनाए। इसका मुख्य उद्देश्य है– ऊर्जा की बचत करनाए संसाधनों का संरक्षण करना, कचरे को कम करना, हरित पुस्तकालय अभ्यास से की खपत घटती है। एलईडी बल्ब सेंसर आधारित लाइट और ऊर्जा संरक्षण उपकरणों का प्रयोग बिजली की खपत को घटाता है। इससे न केवल पर्यावरण सुरक्षित रहता है, बल्कि पुस्तकालय का खर्च भी कम होता है। ई–बुक्स, ई–जर्नल्स और ऑनलाइन डेटाबेस के माध्यम से जानकारी प्राप्त करने से कागज की खपत कम होती है। इससे पेड़ों की कटाई में कमी आती है और प्रकृति को सुरक्षा मिलती है। हरित पुस्तकालयों में नीति अपनाई जाती है। पुराने कागज़ और सामग्री को पुनरूनिर्मित किया जाता है तथा प्लास्टिक के बजाय पर्यावरण अनुकूल सामग्री का उपयोग किया जाता है। ऐसे पुस्तकालयों में पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी कार्यशालाएँ, सेमिनार और प्रदर्शनी आयोजित की जाती है, जिनसे उपयोगकर्ताओं में जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना बढती है। ऊर्जा और संसाधनों की बचत से पुस्तकालय के संचालन खर्च में कमी आती है। यह दीर्घकाल में आर्थिक रूप से भी लाभदायक सिद्ध होता है। हरित पुस्तकालयों में हरियाली स्वच्छता और प्राकृतिक प्रकाश होने से उपयोगकर्ताओं को शांत और प्रेरक माहौल मिलता है, जिससे अध्ययन और कार्य की सुविधा होगी। हरित पुस्तकालय न केवल पर्यावरण की दृष्टि से आदर्श बनता है, बल्कि समाज में एक जिम्मेदार और आधुनिक सस्था के रूप में उसकी पहचान भी मजबूत होती है।

हरित पुस्तकालय अभ्यास के लिए छ.ग. राज्य ही क्यों?

छत्तीसगढ़ भारत का एक प्राकृतिक और संसाधनों से समृद्ध राज्य है। यह 1 नवंबर 2000 को मध्यप्रदेश से अलग होकर बना। राज्य का लगभग 44% क्षेत्र जंगलों से घिरा हुआ है, जहाँ जैव विविधता और हरियाली की प्रचुरता है। छत्तीसगढ़ में तेजी से उद्योग, खनन और शहर बढ़ रहे हैं, जिससे पर्यावरण पर दबाव बढ़ा है। ऐसे में जरूरत है कि लोग प्रकृति के महत्व को समझें। पुस्तकालय, जागरूकता को फैलाने का सबसे अच्छा माध्यम हैं। यहाँ के प्रमुख प्राकृतिक संसाधनों में कोयला, लौह अयस्क वॉक्साइट और जल संसाधन शामिल है। राज्य की राजधानी रायपुर है, और यहाँ शिक्षा का तेज़ी से विकास हो रहा है। छत्तीसगढ़ में कई प्रमुख विश्वविद्यालय है। इन विश्वविद्यालयों के पास अच्छी पुस्तकालय सुविधाएँ है, जहाँ हरित सिद्धांतों को अपनाकर इको फ्रेंडली पुस्तकालय मॉडल विकसित किया जा सकता है।

छत्तीसगढ़ को अध्ययन हेतु चयन करने के मुख्य कारण – प्राकृतिक संपदा से राज्य का हरित परिवेश हरित पहल के लिए अनुकृत है। शिक्षा का विकास राज्य के अनेक विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में हरित पुस्तकालय लागू किए जा सकते हैं। स्वच्छ भारत, हरित ऊर्जा, और "डिजिटल इंडिया" जैसी अनेक योजनाएं यहाँ सक्रिय हैं। सामाजिक जागरूकता–विद्यार्थी और नागरिक पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनशील है। छत्तीसगढ़ में बना हरित पुस्तकालय अन्य राज्यों के लिए 5 भविष्य की संभावनाएँ प्रदर्शित कर सकता है।

डिजिटल पुस्तकालयों का बढ़ता उपयोग–छत्तीसगढ़ के विश्विद्यालयों ने ई–संसाधनो और डिजिटल रिपॉजिटरीं की दिशा में उल्लेखनीय प्रगती की है, जिससे पेपरलेस वातावरण बन रहा है। पर्यावरणीय जागरूकता और सरकारी नीतिया–राज्य सरकार द्वारा हरित छत्तीसगढ़ अभियान जैसी पहले हरित संस्कृति को बढ़ावा देती है। यह वातावरण हरित पुस्तकालय अभ्यास के अध्ययन के लिए उपयुक्त बनाता है। शिक्षा और अनुसंधान के बढ़ते अवसर–राज्य के विश्वविद्यालय और कॉलेज शोध–उन्मुख शिक्षा को बढ़ावा दे रहे हैं, जिससे हरित पुस्तकालय मॉडल का व्यावहारिक अध्ययन और कार्यान्वयन संभव है। नगरीय और ग्रामीण पुस्तकालयों का संतुलन हेतु छतीसगढ़ में ग्रामीण और शहरी दोनों प्रकार के पुस्तकालयों की उपस्थिति अध्ययन के लिए विविध नमूने उपलब्ध कराती है।

निष्कर्ष

भारतीय शैक्षणिक पुस्तकालयों में अब हरित पुस्तकालय की सोच धीरे–धीरे बढ़ रही है। पुस्तकालयाध्यक्षों और कर्मचारियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पहले से ज़्यादा देखी जा रही है लेकिन अभी भी इन विचारों को पूरी तरह व्यवहार में लाने की आवश्यकता है। कई पुस्तकालयों ने कुछ हरित पहले जैसे – बिजली की बचत के लिए लाइट्स लगाना ई–बुक्स और डिजिटल संसाधनों का उपयोग बढ़ाना या कागज़ का कम इस्तेमाल करना अपनाई हैं। फिर भी. बहुत–से पुस्तकालय ऐसे हैं जो धन नीतियों की कमी या प्रशासनिक सहयोग न मिलने के कारण इन पहलुओं को पूरी तरह लागू नहीं कर पा रहे हैं। यह भी पाया गया कि यदि पुस्तकालयों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक माहौल बनाया जाए तो वहाँ काम करने वाले लोग और उपयोगकर्ता दोनों ही ग्रीन प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि पुस्तकालय सौर ऊर्जा का उपयोग करे रीसाइक्लिंग बिन लगाए और उपयोगकर्ताओं को हरित पहल के बारे में जानकारी दे. तो यह न केवल पर्यावरण की रक्षा करेगा बल्कि समाज के लिए एक प्रेरणा बनेगा। सरकार विश्वविद्यालय और पुस्तकालय संघों को मिलकर ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए जिनसे हरित पुस्तकालय की अवधारणा को प्रोत्साहन मिले। इसके लिए वित्तीय सहायता प्रशिक्षण कार्यक्रम और जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं। अंत में कहा जा सकता है कि हरित पुस्तकालय केवल एक आधुनिक अवधारणा नहीं बल्कि समय की आवश्यकता है। जब पुस्तकालय पर्यावरण के अनुकूल बनेंगे तब वे केवल ज्ञान का केंद्र नहीं रहेंगे बल्कि "हरित समाज' के निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

सन्दर्भ सूची

1. Choudhari VM. A case study on green library initiatives new changes and opportunities in academic libraries in India. International Journal of Advanced Research in Science and Technology, 2020.
2. Sharma A, Diwan HD, Sanyal D. Sustainable eco-elements and design features of academic green library.

International Journal of Research and Analytical Reviews, 2022.
3. Ingole AR, Kumari S. Green library concept sustainable development features importance standards and overview in Indian scenario. International Journal of Creative Research Thoughts, 2021.
4. Singh R. Green libraries in India a step towards sustainability. Library Philosophy and Practice,2019:1–12.
5. Kumar S. Eco-friendly practices in academic libraries a review. Journal of Library Information Science,2020:45(2):67–75.
6. Patel M. Sustainability in higher education libraries case studies from India. International Journal of Library Management,2021:12(1):34–48.
7. Sharma P. Green building concepts in university libraries. Indian Journal of Environmental Studies,2018:22(3):145–152.
8. Gupta R. Digital transformation and green practices in libraries. Journal of Information Management,2020:16(4):201–210.
9. Jain A. Green library initiatives in central India. International Journal of Academic Research,2019:7(2):89–96.
10. Mishra K. Role of academic libraries in promoting environmental awareness. Library Herald,2021:59(1):23–31.
11. Tiwari S. Green library practices a comparative study of Indian universities. International Journal of Sustainable Development,2020:14(2):77–85.
12. Das P. Energy conservation in libraries towards a green future. Journal of Library Development,2017:11(3):56–64.
13. Mehta V. Green ICT in academic libraries. International Journal of Digital Libraries,2019:8(2):101–110.
14. Sahu R. Green initiatives in Chhattisgarh’s academic institutions. Raipur Journal of Higher Education,2021:5(1):12–20.
15. Verma N. Environmental sustainability and libraries a review. Journal of Knowledge Studies,2018:9(3):44–53.
16. Singh A. Green library movement in India challenges and opportunities. International Journal of Information Studies,2020:15(2):65–72.
17. Pandey D. Eco-conscious library services in Indian universities. Journal of Academic Librarianship,2019:45(6):102–110.
18. Joshi M. Green library architecture and design. International Journal of Environmental Architecture,2020:6(1):33–41.
19. Rao S. Sustainable practices in library management. Journal of Library Administration,2017:57(4):299–310.
20. Ali F. Green libraries a global perspective with Indian context. International Journal of Library Science,2018:12(3):88–95.
21. Chatterjee B. Green library practices in eastern India. Journal of Sustainable Education,2021:10(2):55–63.
22. World Green Building Council. Green building and sustainable development in education. World Green Building Council, 2019.